

प्रकाश अन्धकार का योग जैविक विकास

अशोक मानव

जी

वन के दो पहलू हैं—तेज, जल। इसी दो गुण की क्रिया-प्रतिक्रिया से सृष्टि बनती है। दोनों के गुण सकारात्मक होते हुए भी विपरीत गुण के कारण सकारात्मक और नकारात्मक परिभाषा से अलंकृत होते हैं। इसी का व्यवहारिक अर्थ प्रकाश, अन्धकार व्यक्त करता है। इस प्रकृति में हर तत्व का महत्व है कोई भी महत्वहीन नहीं है समुण निर्गुण की परिभाषा काल्पनिक हो सकती है। क्योंकि जब सभी तत्व का कोई न कोई गुण है तो फिर उसे निर्गुण कैसे कहा जा सकता है। जब कोई तत्व निर्गुण होगा तो दूसरे तत्व को गुण कैसे दे सकता है? तत्व का प्राकृतिक नियंत्रण जैविक विकास से होता है, जब किसी तत्व का गुण प्रकृति विरोधी होता है तो यहाँ पर जैविक विकास होता है यहाँ का जीव गुण खत्म करता है और अपने शरीर से ऐसी रंज (मावना) छोड़ता है जो प्रकृति में विरोधी गुण को बढ़ने से रोकता है प्रकृति की इस जैविक श्रद्धा में मानव रूप सबसे अधिक गुणवान होता है। मानव मस्तिष्क ब्रह्माण्ड है। इसके अन्दर प्रकृति में जिस प्रकाश से जैविक विकास शुरू होता है उस प्रकाश का गुण है भावनात्मक रंज को पहचानकर अपने को सुरक्षित करना और इस प्रकृति से अपना भोजन प्राप्त करना। यह क्रिया सूर्य प्रकाश से स्रोत समय पूरा करता है जिस सूर्य प्रकाश से शरीर का विकास होता है उसकी गति कभी रुकती नहीं है वह चलायमान होती है। जब वह शरीर में रहता है तो उसका प्रकाश सभी मन कुछ सोचता रहता है तो उसका मन वही प्रक्रिया करने लगता है। वह मन बहुत दूर तक निकल जाता है।

और वहाँ जानकारी लाता है, जगने के बाद शरीर को एहसास कराता है, उसी से शरीर मविध्य में अपनी क्रिया करता है। यह मन सूक्ष्म प्रकाश होने के कारण भावनात्मक रंज को पहचानता है। जब वह मन शरीर में होता है तो जिस तरह सोचता है उसी तरह की भावात्मक रंज अपने शरीर से छोड़ता है। इसकी पहचान हर व्यक्ति कर सकता है। प्रकृति में इसी भावनात्मक रंज से क्रिया होती है जिस तरह की भावनात्मक रंज व्यक्ति छोड़ता है उसी तरह की रंज उसी से ग्रहण करना पड़ता है। मुँह के बोले शब्द मानवीय व्यवस्था पर प्रभाव डालते हैं ये शब्द प्रकृति की व्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं डालते हैं। शब्द भावना छोड़कर ध्यान क्रिया से इस तत्व की भावनात्मक रंज हर व्यक्ति पहचान सकता है इस पहचान से व्यक्ति सबसे पहले स्वयं सुरक्षित होता है, जिससे प्रकृति स्वतः सुरक्षित हो जाती है।

मन का संबन्ध आलम्बल और इच्छाशक्ति से होता है इसी के मन्थन से हर जीव प्रकृति को गुण छोड़ता है। हर जीव प्रकृति से आहार ग्रहण करता है चाहे वह सजीव हो या निर्जीव। निर्जीव उस कहते हैं जिसमें अपने जैसे तत्व पैदा करने की क्षमता न हो, सजीव उसे कहते हैं जिसमें अपने जैसे तत्व पैदा करने की क्षमता हो। दोनों तरह के अन्धकार व्यक्ति के विचार पर निर्भर करते हैं। जिस तरह का विचार बनता है उसी तरह की भावना प्रकृति में क्रिया करती है। यदि एक ही तरह का पदार्थ कई जीव को दिया जाए तो देखने को मिलता है कि सभी जीव अलग-अलग गुण प्रकृति में छोड़ते हैं, वही गुण उसकी विचार की सत्ययता को सिद्ध करता है। हर फूल खुशबू अलग होती है जबकि एक निश्चित

वातावरण में होने के बाद एक निश्चित आहार सभी खाते हैं। प्रकृति में जीव को शरीर उसके मन का क्षेत्र है जिसमें वह अपने आपको सुरक्षित कर क्रिया करता है। हर शरीर अपने मन का मन्थन होता है पर जीवन अपने आपको सुरक्षित रखने का एक घर बना लाता है। यह भ्रान्त उसका प्राकृतिक ज्ञान है इसके लिए वह कोई ग्रन्थ नहीं पढ़ता है मानव के अतिरिक्त अन्य जीव अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लेने के बाद शान्त रहते हैं जिससे उसका मन शरीर में नहीं प्रकृति में क्रिया करता है और प्रकृति की भावनात्मक रंज को पहचान लेता है इसीलिए प्रकृति में होने वाली घटना का एहसास इन्हें पहले से हो जाता है जिसे ये भावनात्मक रंज व अपने शब्दों से व्यक्त कर देते हैं। मानव इस ध्यानवस्था में जाकर हर किसी को बता सकता है अपने इसी गुण के कारण वह जानवर से विशेष माना जाता है ध्यान से किसी भी तत्व के बारे में जानकारी प्राप्त करने की क्षमता हर व्यक्ति के अन्दर होती है। मानवीय मूल्य होने के कारण हर व्यक्ति की अनिवार्य शिक्षा ध्यान है। जिसके माध्यम से वह प्रकृति में सत्य-असत्य का ज्ञान कर सकता है इसी गुण के व्यक्ति सहयोगी के लिए शुभ भावना छोड़कर विरोधी भावना से काटकर हर मार्ग से बच सकते हैं। जानवर अशुद्ध भावना कम छोड़ते हैं इसीलिए उन्हें रोग कम होता है। जबकि वे मानव द्वारा खराब माना जाने वाला भोजन करते हैं। जो धूमने वाले जीव होते हैं वे मौसम परिवर्तन के मर्ज भी नहीं होने देते हैं। वे प्रकृति में ऐसे पदार्थ पहचानकर खाते हैं जिनसे कोई रोग न हो। मानव समाज भी ध्यान से अपनी प्राकृतिक चिकित्सा कर सकता है।